

121, 189. — δ) auf einen acc.: येन त्वं स्वाग्र्यं प्रापयामि PAÑĀT. 168, 5. — ϵ) auf die 1te Person und zwar α) auf das grammatische Subject: स्वमंशं वितरामि ते MBh. 3, 3053. R. 2, 79, 12. KATHĀS. 18, 296. 33, 68. स्वेन भर्त्रा सह 43, 156. स्वबाहुबलमाश्रित्य कृत्विष्ये ऽहं वानरान् MBh. 1, 5579. गच्छेयं स्वशरीरेण देवतानां परां गतिम् R. 1, 57, 11. 2, 74, 19. KATHĀS. 23, 193. 71, 58. PAÑĀT. 226, 14. Hit. 11, 5. 18, 9. — β) auf den Sprechenden, trotzdem, dass eine 2te imperat. vorangeht: प्रसिष्ये भक्त्यिष्ये ऽहं प्रविश स्वोदरं प्रति R. 5, 56, 16. एहि गच्छावो वर्धमानपुत्रं प्रिये । सा हि स्वा राजधानी KATHĀS. 39, 162. fg. — γ) auf das logische Subject: मया त्वय प्रवेष्टव्या स्वा तनुः KATHĀS. 26, 105. स्वशिरो दत्तं मया 41, 47. 42, 76. सेयं स्वदेहार्पणनिष्कुर्येण न्याय्या मया मोचयितुं भवतः Ragh. 2, 55. — δ) auf einen gen.: प्रविश स्वोदरं मम R. 5, 56, 25. स्वं मनस्वद्वतं मम KATHĀS. 104, 59. विद्यते चावयोरत्र स्वकस्तलिखितं मिथः 24, 189. — ϵ) auf einen acc.: स्वनगराय प्रस्थितं माम् CĀK. 84, 11. — 2) m. ein Eigener, Angehöriger; pl. die Eigenen, Seinigen, Freunde (Gegens. अन्य, शरण, श्रमित्र, पर) P. 1, 1, 35. Vop. 3, 9. AK. 2, 6, 1, 34. 3, 4, 22, 213. TRIK. 3, 3, 424. H. 561. H. an. Med. पतिं भार्तात्स्वान् AV. 11, 9, 8. 3, 19, 3. 7, 52, 1. 9, 2, 14. 10, 3, 8. 18, 2, 23. श्रेष्ठः स्वानाम् AIT. Br. 1, 5. TS. 3, 2, 2. 2. ÇAT. Br. 14, 8, 4, 1. KĀTH. 11, 3. 6. स्वा ऽभिषिञ्चति ÇAT. Br. 5, 3, 5, 12. यो ऽस्य स्वा भवति 4, 2, 1. 11. 1, 1, 4, 5. KAUSH. Up. 4, 20. M. 2, 109. स्वः परो ऽपि वा Bhaṅ. P. 6, 16, 10. मृतं स्वमिव बान्धवाः (अनुशोचति) MBh. 1, 4967. स्वेन RĪĠA-TAR. 1, 114. नैव स्वे (gegen P. und Vop.) न परे समाजनन्यस्परम् MBh. 6, 4162. स्वे स्वान्यरे स्वकीयाश्च निजघ्नः 7, 7608. परे ऽपि स्वा (Conj. für स्व) भवति Spr. (II) 2341. स्वैः 1223. स्वभ्यो नः सुमहद्भयम् R. 4, 18, 16. स्वानाम् Bhaṅ. P. 1, 8, 1. 2, 8, 5. 3, 15, 42. 4, 3, 19. 24, 44. 5, 8, 17. 9, 18, 29. स्वेषु परेषु च R. 1, 7, 10. Spr. (II) 1637. स्वभयं Gefahr von Seiten der Eigenen VARĀH. Bhaṅ. S. 93, 10. Spr. (II) 6190. ein Mann der eigenen Kaste: न विप्रं स्वेषु तिष्ठतु मृतं शूद्रेण नापयेत् M. 5, 104. स्वा ein Weib der eig. K. KĀTH. Ça. 18, 6, 28. M. 3, 13. 9, 85. fg. — 3) die eigene Person, das Selbst, das Ich (fungiert wie आत्मन् als pron. reflex.); m. AK. 3, 4, 22, 213. H. an. Med. n. TRIK. स्वं च ब्रह्म च संसारे मुक्तौ तु ब्रह्म केवलम् Spr. (II) 7276. यस्तूर्णानां इव तनुभिः प्रधानैः । स्वभावतो देव एकाः स्वमावृणोत् ॥ sich Cvetāc. Up. 6, 10. लङ्कास्थः स्वं (= स्वीयं देहम् Comm.) धरिष्यसि R. 7, 108, 25. Spr. (II) 3724. Naish. 1, 31. 6, 95. RĪĠA-TAR. 3, 370. fg. 5, 303. Verz. d. Oxf. H. 428, b, 32. PRAB. 14, 16. ÇAT. 2, 21. 14, 271. संज्ञानीष्व स्वम् Vop. 5, 13. voc. स्व NALOD. 3, 30. स्वेन Schol. zu KĀTH. Ça. 303, 4. यदापुंक्तं त्मना स्वादि क्षुभिर्विष्यर्धसः von selbst, von sich aus RV. 5, 87, 4. स्वस्मात् Spr. (II) 5734. स्वस्य 3774. 4719. 5934. 7332. R. 7, 37, 4, 43. RĪĠA-TAR. 1, 139. 2, 23. 3, 439. 4, 280. 6, 207. SĀH. D. 11, 4. 13. Bhaṅ. P. 3, 2, 12. NĪLAK. 62. ÇATR. 14, 342. VEDĀNTAS. (Allah.) No. 81. नास्ति नः स्वे विचाराणां R. GORR. 1, 74, 22. रमतः स्व आत्मनः Bhaṅ. P. 5, 19, 5. स्वस्मिन्निव स्वपुत्रे ऽपि प्रेमदर्शनात् VEDĀNTAS. (Allah.) No. 81. परेण स्वस्मिन्स्ताडिते सति Schol. zu PRAB. 75. ÇI. 18. कटाक्षः प्रस्यं स्वस्मिन्समावेशयति Schol. zu P. 5, 1, 52. zu Bhaṅ. P. 12, 4, 4. सैनिकाः स्वान्यवर्तन्त स्वामिभक्तिपराम्बुलाः kümmernten sich (nur) um sich RĪĠA-TAR. 4, 411. Häufig am Anfange eines comp. (auch in der ältesten Sprache, wie man aus den besonders aufgeführten Wörtern ersehen kann): ॐस्वेहेन R. 6, 89, 11. WEBER, RĀMAT. Up. 293. 301. ॐशरणव्यापा-

रमात्रोद्यताः Spr. (II) 2032. स्वानुभूयेकमान 2789. ॐस्वतपां तु यो वेद 4986. 7276. ॐपरप्रतारक 7283. स्वापकर्षं परात्कर्षं हूतेतिर्मन्यते तु कः 7339. ॐप्रातरम् KATHĀS. 34, 198. 102, 145. ॐपोषणपरं MĀRK. P. 14, 69. ॐस्मृतिरुक्तये RĪĠA-TAR. 5, 463. Bhaṅ. P. 9, 10, 30. 10, 38, 15. 11, 25, 2. SĀH. D. 11, 2. 57. स्वनिस्तरणाशक्तौ KULL. zu M. 8, 350. — 4) n. (nach den Lexicographen auch m.) das Eigene, Eigentum, Besitz AK. TRIK. H. 192. H. an. Med. HALĀJ. 1, 80. ध्रुवमस्य यत्स्वम् RV. 7, 82, 6. यदेव किं च यजमानस्य स्वम् TS. 1, 3, 9, 1. पुरुषस्य TBa. 1, 3, 2, 4. AV. 6, 107, 1. तदाहुः स्वस्य गोपनम् 12, 4, 10. ÇAT. Br. 5, 3, 2, 1. TS. 3, 1, 2, 3. 4. P. 6, 2, 17. सर्वं स्वं ब्राह्मणस्येदं यत्किंचिज्जगतोगतम् M. 1, 100. स्वमेव ब्राह्मणो भुङ्क्ते स्वं वस्ते स्वं ददाति स 101. स्वादान 8, 172. परस्य 197. नहि तस्यास्ति किंचित्स्वम् 417. JĀĠĀ. 2, 175. MBh. 4, 1602 (धनम् ed. Bomb.). Spr. (II) 3640. 4849, v. l. 7284. ॐविनाशं VARĀH. Bhaṅ. S. 79, 23. ॐविजयं Bhaṅ. P. 4, 23, 4. H. 3. 76. 137. राज्ञः, श्रोत्रियः M. 8, 149. ब्राह्मणः 11, 18. 126. देवः, असुरः 20. 26. 12, 60. JĀĠĀ. 3, 212. MBh. 3, 15967. MĀRK. 61, 3. Spr. (II) 2943. KATHĀS. 33, 154. परः (s. auch bes.) R. 1, 6, 11. Spr. (II) 247 (pl.). 7367 (pl.). am Ende eines adj. comp. (f. आ): कृतः VARĀH. Bhaṅ. S. 104, 19. KATHĀS. 22, 62. 36, 74. 58, 23. Bhaṅ. P. 5, 13, 7. — 5) n. Bez. des 2ten astrol. Hauses (= अर्थ) VARĀH. Bhaṅ. 1, 16. 4, 4. 5, 3. 9, 1. LAGUĀ. 2, 11. — 6) n. (in Algebra) plus, or affirmative quantity WILSON. — Vgl. निः, परः, प्रतिस्वम्, ब्रह्म, यथा (adv. auch TS. PRAT. 24, 4), सर्वं und सौत्र. स्वकास्म्य्. ॐपति nach dem Himmel (स्वः) verlangen SIDDH. K. zu P. 3, 1, 9. Vop. 21, 4.

स्वःपथ m. der Weg zum Himmel so v. a. das Sterben: स्वःपथाय मतिं चक्रे Bhaṅ. P. 1, 13, 32.

स्वःपाल m. Himmelshüter Bhaṅ. P. 10, 51, 16.

स्वःपृष्ठ n. N. verschiedener Sāman Ind. St. 3, 246, a. LĀTJ. 7, 10, 8.

स्वका = स्व 1) adj. (f. स्वका und स्विका) P. 7, 3, 47. Vop. 4, 7. eigen (mein, dein, sein u. s. w.) AK. 3, 4, 2, 34. Bezogen α) auf eine dritte Person und zwar α) auf das grammatische Subject: स्वकं पितरमाशयेत् M. 3, 220. 4, 14. 154. 7, 171. 185. 8, 50. 387. 9, 199. 207. 11, 187. 12, 71. fg. JĀĠĀ. 2, 44. Bhaṅ. 11, 50. MBh. 3, 3013. 2232. 2685. 2997. 13580. 4, 507. R. 1, 8, 25. 2, 110, 35. 3, 33, 2. 71, 8. KĀM. NĪTIS. 10, 26. Spr. (II) 4239. 5304. VARĀH. Bhaṅ. S. 19, 12. KATHĀS. 9, 86. 20, 40. 23, 46. 25, 261. 34, 94 (im comp.). 46, 128. 61, 33. 66, 190 (im comp.). MĀRK. P. 28, 34. Bhaṅ. P. 1, 11, 1. 12, 29. 13, 25. PAÑĀT. 3, 1, 19. H. 836. SADDH. P. 4, 11, b. — β) im Relativsatze auf das grammatische Subject des vorangehenden Demonstrativ-Satzes: कन्यात्स एनं यो कन्यात्कुलधर्मं स्वकां (स्विका ed. Bomb.) तनुम् MBh. 6, 123. — γ) auf das logische Subject (instr.): यवनैरेष नियमानः स्वकं लयम् Bhaṅ. P. 4, 28, 23. Spr. (II) 7049. — δ) auf einen gen.: स्वका भार्या गच्छताम् MBh. 7, 2762. तस्य मतिर्ज्ञाता व्याख्यातुं पितरं स्वकम् R. 1, 9, 27. Suçh. 1, 188, 1. KATHĀS. 32, 175. — ϵ) auf einen acc.: घञ्जयतो स्वके नेत्रे M. 4, 44. 9, 273. MBh. 1, 1357. 12, 1894. पितरं च न पश्यामि केनाद्य भवने स्वके R. GORR. 2, 74, 14. — ζ) auf ein zu ergänzendes allgemeines Subject: भार्या पुत्रः स्वका तनुः so v. a. die Gattin und der Sohn ist des Mannes Leib M. 4, 184. — η) auf die zweite Person und zwar α) auf das grammatische Subject: स्वका नारीम् — नाभिरोचयसे नेतुं त्वम् R. 2, 29, 19. — β) auf einen gen.: मा ते स्वका श्रिया नि-